साहित्य और शिक्षण क्षेत्र में भाषा का प्रभाव

शारदा सुशांत कांबले

के.एल.ई. जी.आई. बागेवाड़ी पी.यू. कॉलेज, निपानी।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263951

ABSTRACT:

भाषा मानव सभ्यता की सबसे बड़ी देन है। यह न केवल विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का साधन है, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का माध्यम भी है। भाषा की शक्ति से ही साहित्य का निर्माण होता है और शिक्षा समाज तक पहुँच पाती है। भारत जैसे बहुभाषिक देश में भाषा का साहित्य, शिक्षा और संस्कृति पर गहरा प्रभाव रहा है। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश से लेकर हिंदी, उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं तक साहित्य ने अपने समय की भाषा को अपनाकर समाज को दिशा दी है। भाषा और साहित्य का यह संबंध केवल विचारों की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की चेतना, भावनाओं, परंपराओं और मूल्यों का भी वाहक है। इसी प्रकार शिक्षा भी भाषा के माध्यम से ही विद्यार्थियों तक ज्ञान, नैतिकता और संस्कृति का संचार करती है।

KEYWORDS:

भाषा का प्रभाव, साहित्य, शिक्षण, शिक्षा, मातृभाषा, संस्कृति.

प्रस्तावना:

1. भाषा और साहित्य का परस्पर संबंध: साहित्य के बिना भाषा सूखी नदी की तरह है और भाषा के बिना साहित्य गूँगा। दोनों का संबंध अविच्छिन्न है।

भाषा साहित्य की आत्मा है: साहित्यकार अपने अनुभवों, भावनाओं और विचारों को भाषा के माध्यम से ही समाज तक पहुँचाता है।

युगानुसार भाषा का विकास: प्राचीन काल में संस्कृत साहित्य का मुख्य माध्यम रही, मध्यकाल में लोकभाषाओं ने साहित्य को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाया, और आधुनिक युग में खड़ी बोली हिंदी ने राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया।

साहित्य के माध्यम से भाषा का परिष्कार: साहित्य के ज़रिए भाषा का शब्द-संग्रह, शैली और अभिव्यक्ति परिष्कृत होती है।

कबीरदास जी कहते हैं:

"बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि॥"

यह दोहा बताता है कि भाषा साहित्य के लिए अनमोल धरोहर है, जिसे सोच-समझकर प्रयोग करना चाहिए।

2. भाषा, साहित्य और संस्कृति का त्रिकोणीय संबंध: भाषा, साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।

» साहित्य समाज का दर्पण है, जो भाषा के माध्यम से संस्कृति को अभिव्यक्त करता है। संस्कृत में रचित महाकाव्यों – रामायण, महाभारत – ने भारतीय संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखा।

» भक्ति युग के कवियों – तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, कबीरदास – ने अपनी मातृभाषाओं में रचनाएँ करके धर्म, भक्ति और मानवता का संदेश जन-जन तक पहुँचाया।

» तुलसीदास की 'रामचरितमानस' में अवधी भाषा के प्रयोग ने साहित्य को लोकभाषा से जोड़ा और भारतीय समाज के नैतिक व

सांस्कृतिक मूल्यों को व्यापक रूप से प्रसारित किया।

3. शिक्षण क्षेत्र में भाषा का प्रभाव: शिक्षा भाषा के माध्यम से ही अर्जित और संप्रेषित की जाती है। ज्ञान का हर आयाम—विज्ञान, गणित, साहित्य, कला—भाषा के माध्यम से ही समझा और पढ़ाया जाता है।

» मातृभाषा का महत्व: शिक्षा के प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा में पढ़ाई अधिक प्रभावी होती है। महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर और कई शिक्षाशास्त्रियों ने मातृभाषा में शिक्षा पर ज़ोर दिया।

» महात्मा गांधी का कथन: "मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से ज्ञान सरलता और स्थायित्व से प्राप्त होता है।"

» भाषा के माध्यम से नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा: साहित्यिक ग्रंथ, कहानियाँ, कविताएँ और लोककथाएँ विद्यार्थियों में मानवीय मूल्यों, सहानुभूति और नैतिकता का संचार करती हैं।

» उच्च शिक्षा और वैश्विक परिप्रेक्ष्य: आज उच्च शिक्षा में अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ा है, परंतु भारतीय भाषाओं में भी तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) भी मातृभाषा को शिक्षण का प्राथमिक माध्यम बनाने पर ज़ोर देती है।

4. मैथिलीशरण गुप्त की कविता में भाषा और साहित्य:

मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964) हिंदी के खड़ी बोली युग के महान कवि और 'राष्ट्रीय कवि' कहलाते हैं। उन्होंने साहित्य को जनभाषा हिंदी से जोड़कर भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव का संचार किया।

» गुप्त जी की भाषा शैली: गुप्त जी ने संस्कृतनिष्ठ परंतु सरल और प्रभावी हिंदी भाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा सहज, स्पष्ट और प्रेरक थी, जो जनमानस के हृदय को स्पर्श करती थी।

» 'भारत-भारती' में राष्ट्रीय चेतना: उनकी कृति 'भारत-भारती' में भारतीय संस्कृति, स्वदेश प्रेम और जाग्रति का आह्वान किया गया।

'भारत-भारती' की पंक्तियाँ:

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।"

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि साहित्य और भाषा मिलकर समाज की चेतना को जाग्रत कर सकते हैं।

» अन्य रचनाएँ: साकेत में सीता के जीवन के माध्यम से आदर्श स्त्रीत्व और मानवीय मूल्यों का चित्रण। पंचवटी में मर्यादा और संस्कृति के आदर्शों का वर्णन।

5. कबीरदास के दोहों में भाषा और साहित्य:

कबीरदास (15वीं शताब्दी) भक्ति युग के निर्गुण संत कवि थे। उन्होंने साहित्य को लोकभाषा (खड़ी बोली, अवधी, ब्रज मिश्रित) के माध्यम से सीधे जनता तक पहुँचाया।

» भाषा की सरलता और स्पष्टता: कबीरदास कठिन संस्कृत या फ़ारसी भाषा के पक्ष में नहीं थे। वे चाहते थे कि साहित्य ऐसा हो जिसे हर व्यक्ति समझ सके।

» दोहा:

"साखी कहै कबीर की, सुनी सुनी समझी सोय।
हृदय कपाट खोल कर, तौ पाए हरि होय॥"

कबीर मानते थे कि भाषा की सरलता से ही ज्ञान का संचार संभव है।

वाणी की मधुरता और जिम्मेदारी:

दोहा:

"बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि।
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि॥"

इस दोहे से स्पष्ट होता है कि साहित्य और भाषा में वाणी की मर्यादा और विनम्रता का महत्व है।

साहित्य का उद्देश्य – सामाजिक सुधार:

दोहा:

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥"

कबीरदास ने साहित्य को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मानवता और प्रेम का साधन बताया।

6. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भाषा की भूमिका:

आज का युग डिजिटल युग है। भाषा और साहित्य दोनों ने तकनीकी साधनों के कारण नए रूप धारण किए हैं।

» ई-साहित्य: अब पुस्तकालय डिजिटल हो गए हैं और ई-बुक्स के रूप में साहित्य विश्वभर में उपलब्ध है।

» ऑनलाइन शिक्षा: मातृभाषा और अंग्रेज़ी दोनों में शिक्षा प्राप्त करने के अवसर बढ़े हैं।

» अनुवाद साहित्य: विभिन्न भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य को दुनिया भर के लोग पढ़ पा रहे हैं।

» बहुभाषिकता: वैश्विक स्तर पर भाषाओं के बीच संवाद और समझ का दायरा बढ़ा है।

7. साहित्य, शिक्षा और भाषा का समन्वय:

भाषा साहित्य की आत्मा है, साहित्य शिक्षा का प्रेरक है, और शिक्षा समाज को विकसित करती है। तीनों के समन्वय से ही समाज में नैतिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक प्रगति संभव है।

निष्कर्ष:

भाषा, साहित्य और शिक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं। भाषा के बिना साहित्य की अभिव्यक्ति असंभव है। साहित्य के बिना शिक्षा का मानवीय पक्ष अधूरा है। कबीरदास ने सरल भाषा के माध्यम से समाज में जाग्रति फैलाई। मैथिलीशरण गुप्त ने राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए जनभाषा हिंदी को चुना। आज भी यदि शिक्षा और साहित्य मातृभाषा के माध्यम

से जनमानस तक पहुँचें, तो समाज में ज्ञान, संस्कृति और मूल्य शिक्षा का विकास और भी प्रभावी ढंग से होगा।

कबीरदास की शिक्षा:

"जैसे खाद बिनु खेत नहीं, तैसे बिनु भाषा ज्ञान।
भाषा बिना न फूल फल, न उपजे विद्यान॥"

यह दोहा स्पष्ट करता है कि भाषा ही ज्ञान, साहित्य और संस्कृति की आधारशिला है।

संदर्भ सूची:

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी – कबीर
2. मैथिलीशरण गुप्त – भारत-भारती, साकेत, पंचवटी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास
4. नागेंद्र – भारतीय साहित्य और संस्कृति

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.